

Online Divisional Seminar on “Agroforestry Extension: Issues and Challenges” [11.08.2023]

The Extension Division, ICFRE-FRI organized an online division level seminar on "*Agroforestry Extension: Issues and Challenges*" on 11th August, 2023 at FRI, Dehradun to discuss the following issues like, Status of agroforestry in India, Need and scope of extension of agroforestry in different parts of the country with people participation, Issues and challenges coming the way of agroforestry extension and Way forward for extension of agroforestry in an effective way. At outset of the session, Shri Mahaling, IFS, Head Extension Division, FRI welcomed all the participants and guest speakers and briefed the house about the outline and objectives of the seminar.

The seminar inaugurated by Dr. Renu Singh, IFS, Director, FRI, Dehradun. While delivering the inaugural address Director FRI expressed the concern on the current status of land degradation in the country and the impact of the consequences of the climate change on various aspects of the life.

Further focusing on the scope of agroforestry especially in view of Paris Climate change Agreement, Director ICFRE-FRI emphasized that India is committed to achieve the NDC (Nationally Determined Contribution) targets by creating additional carbon sink of 2.5 to 3 Billion tons of CO₂ equivalent through additional forest and tree cover by 2030 which itself a great opportunity for agroforestry extension to gear up itself to take up the challenge.

Lastly address was concluded with the hope that this seminar will certainly be helpful to recommend an appropriate strategy for adoption of Agroforestry in a real sense for income generation of farmers while ensuring the ecological integrity in the long run.

The first technical session started with the presentation on "*Community participation for success and sustainability of Agroforestry Extension programmes*" given by Dr. Bankey Bihari, Principal Scientist, ICAR-IISWC, Dehradun. In his presentation, Dr. Bihari mentioned that how effectively the community participation in conservation natural resources and recovery of the degraded land is possible with technical know-how from the government agencies. He also said that agroforestry can play a key role in ameliorating

the environment, providing critical ecosystem services, providing nutritional security, increasing productivity besides providing additional income for farmers. Further he emphasized that for successful participation of the community values transparency, equality, caring and sharing with feelings play a significant role in any project. He mentioned that from individual contact to mass communication, an active involvement of planners, experts and extension workers is necessary to make an extension programme a great success.

During second technical session by Dr. Sandeep Arya, Associate Professor, Chaudhary Charan Singh Haryana Agriculture University, Hisar spoke on “*Extension of economically viable agroforestry systems in Haryana*”. He gave a detailed account on Poplar, Eucalyptus, Melia and Khejari based agroforestry systems with their economic viability in Haryana. He also highlighted some case studies related with different agroforestry systems in the State. He mentioned that the agroforestry systems developed by him are widely popularized in the Haryana State due their economic viability and can also be adopted in other parts of the country.

In third session Dr. Ashok Kumar, Scientist-G, FRI, Dehradun delivered his talk on “*Production of quality planting stock of Agroforestry species for livelihood improvement*” and shared information agroforestry species having potential of high productivity to enhance the wood production and maintain supply chain of wood on sustainable basis. He mentioned that genetically improved quality planting material is needed to enhance the wood production for wood based industries dealing with housing and construction, packing and parcels, furniture and timber, handicrafts and sports, railways and ship building, mining and bio-energy, pulp and paper, plywood and panels, etc.

He told that for producing genetically improved quality planting material, there is a need for application of genetic principles which have a potential to increase the quantitative and economic value of trees and under storey crops under an agroforestry system. It is only possible by selection of good parentage, analysis of genetic variation and diversity, adoption of appropriate breeding methods, functional conservation strategies, efficient propagation techniques and adoption of cultivars by growers.

During technical sessions, participants raised quarries on different issues coming the way of agroforestry extension which include the dearth of certified and quality planting material, crop diversification, marketing linkages, institutional networking and involvement of people in agroforestry programmes, etc.

After presentations of subject experts and taking queries raised by participants, a common discussion was made among subject experts, participants and team of scientists and officers of Extension Division. As a result of discussion, some suggestions came into light in the form of recommendations.

About 70 participants including Heads of Divisions of FRI, officers and scientists of FRI and students of FRI deemed university and from other wood industry and Non-Government Organization were attended the programme. Dr. Charan Singh, Scientist-F Extension Division coordinated the programme and proposed vote of the thanks to all participants and dignitaries. Dr. Devendra Kumar, Scientist-E, Shri Rambir Singh, Scientist-E and Shri Vijay Kumar, ACF, Mr. Preet Pal Singh, FRO, Shri Naveen Chauhan, Shri Amit Singh and other officials of Extension Division, Forest Research Institute, Dehradun were present on the occasion and helped in successful organization of the seminar.

Glimpses of the Seminar



निकाली। यज्ञ में प्रमुख पुरोहित पंडित बालू राम शर्मा हैं। मा.सि.रि.
 12-08-2023 अमर उजाल
जलवायु परिवर्तन के प्रभाव पर चिंता जताई
 देहरादून। बढ़ती जनसंख्या के साथ ही आर्थिक विकास के कारण भोजन, चारे, ईंधन की लकड़ी, फलों और अन्य औद्योगिक कच्चे माल की मांग कई गुना बढ़ी है। इस बीच कृषि के क्षेत्र में पिछले कुछ वर्षों में विचलन के कारण गिरावट दर्ज की गई है। यह बात वन अनुसंधान में कृषि वानिकी विस्तार : मुद्दे और चुनौतियां विषय पर आयोजित सेमिनार में वक्ताओं ने कही। सेमिनार का उद्घाटन एफआरआई निदेशक, आईएफएस डॉ. रेनू सिंह ने किया। उन्होंने देश में भूमि क्षरण की वर्तमान स्थिति और जीवन के विभिन्न पहलुओं पर जलवायु परिवर्तन के परिणामों के प्रभाव पर चिंता व्यक्त की। मा.सि.रि.

Amar Ujala 12-8-2023

देहरादून, शनिवार, 12 अगस्त, 2023

उत्तराखंड

जनभारत मेल | 7

कृषि वानिकी विस्तार- मुद्दे और चुनौतियां पर ऑनलाइन सेमिनार का आयोजन

देहरादून, संवाददाता। राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में कृषि वानिकी की महत्वपूर्ण भूमिका और परिस्थितिकी और पर्यावरण को समझा धाराई को देखते हुए, विस्तार प्रभाग, वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून ने एकआरआई, देहरादून में कृषि वानिकी विस्तार- मुद्दे और चुनौतियां पर एक ऑनलाइन सेमिनार का आयोजन किया।

श्री मासिंग, आईएफएस, प्रमुख विस्तार प्रभाग, एकआरआई ने सभी प्रतिभागियों और अतिथि वक्ताओं का स्वागत किया और स्पर्दन को सेमिनार के उद्देश्यों के बारे में जानकारी दी। ऑनलाइन सेमिनार का उद्घाटन डॉ. रेनू सिंह, आईएफएस, निदेशक, एकआरआई, देहरादून ने किया। उद्घाटन भाषण देते हुए निदेशक एकआरआई ने देश में भूमि क्षरण को वर्तमान स्थिति और जीवन के विभिन्न पहलुओं पर जलवायु परिवर्तन के परिणामों के प्रभाव पर चिंता व्यक्त की। विशेष रूप से पेरिस जलवायु परिवर्तन समझौते के संदर्भ में कृषि वानिकी के दायरे पर ध्यान केंद्रित करते हुए, निदेशक एकआरआई ने इस बात पर जोर दिया कि भारत औद्योगिक वन के माध्यम से 2.5 से 3 बिलियन टन छोड़ के घटाने अतिरिक्त कार्बन सिंक



बनाकर एनडीसी (राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित योगदान) लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए प्रतिबद्ध है। 2030 तक कुल्ले का आच्छादन, जो कृषि वानिकी विस्तार के लिए चुनौती स्वीकार करने के लिए खुद को तैयार करने का एक बड़ा अवसर है। अंत में संकेतन इस अंश के साथ समाप्त हुआ कि यह सेमिनार विद्वित रूप से लंबे समय में परिस्थितिक अखंडता सुनिश्चित करते हुए किसानों को आम सृजन के लिए वार्षिक आयों को कृषि वानिकी को आनने

के लिए एक उच्चतम लक्ष्योत्ति को सिफारिश करने में सहायक होगा। उद्घाटन भाषण के बाद विभिन्न विषयों पर तकनीकी सत्र आयोजित किये गये। प्रथम विषय डॉ. बंके विश्वेश, प्रधान वैज्ञानिक, आईसीएआर-आईआईएमडब्ल्यूसी, देहरादून द्वारा कृषि वानिकी विस्तार कार्यक्रमों को सफलता और स्थिरता के लिए सामुदायिक भागीदारी पर था। उन्होंने अंशेय किया कि सरकारी एजेंसियों की तकनीकी जानकारी के साथ प्राकृतिक संरक्षकों के संरक्षण और वंश

भूमि की वसुंधी में सामुदायिक भागीदारी कितनी प्रभावी ढंग से संभव है। उन्होंने यह भी कहा कि कृषि वानिकी पर्यावरण को बेहतर बनाने, महत्वपूर्ण परिस्थितिकी तंत्र सेक्टर प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। पोषण सुरक्षा, उत्पादकता बढ़ाने के अलावा किसानों को अतिरिक्त आय प्रदान करना। इसके अलावा उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि समुदाय को सफल भागीदारी के लिए पारदर्शिता, समानता, देखभाल और साझा करना और भावना जैसे मूल्य किस्मों भी परियोजना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। दूसरा सत्र डॉ. संदीप अर्वा, एग्रीसिस्ट प्रोफेसर, चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिमरट्ट द्वारा दिया गया। उन्होंने हरियाणा में अर्थिक रूप से व्यवहार्य कृषि वानिकी प्रणालियों के विस्तार पर बात की। उन्होंने हरियाणा में पोपलर, यूके-लिटरस, मेलिना और खोजड़े अफारित कृषि वानिकी प्रणालियों के अर्थसास्त्र के स्पष्ट विश्लेषण पर बात की। उन्होंने प्रस्तुति के माध्यम से विभिन्न कृषि वानिकी प्रणालियों पर केस स्टडीज भी साझा की गईं। तीसरे सत्र में डॉ. अशोक कुमार, वैज्ञानिक-जी,

एकआरआई, देहरादून ने अवलोकित में सुझाव के लिए कृषि वानिकी प्रणालियों के गुणवत्तापूर्ण रोपण स्टॉक के उत्पादन पर व्याख्यान दिया और अन्य प्रणालियों को जानकारी भी साझा की जो विद्वित रूप से टिकाऊ आधार पर तकड़ी के उत्पादन को बढ़ाने और आर्गुन शुद्धता को बनाए रखने में सहायक है।

कार्यक्रम में एकआरआई के प्रभागों के प्रमुख, एकआरआई के अधिकारियों और वैज्ञानिकों और एकआरआई डीम्ट विद्यविद्यालय के छात्रों और अन्य लक्ष्य उद्योग और गैर-सरकारी संगठनों के लगभग 70 प्रतिभागियों ने भाग लिया। डॉ. चरण सिंह, वैज्ञानिक-एफ विस्तार प्रभाग ने कार्यक्रम का संचालन किया और सभी प्रतिभागियों और गणमान्य व्यक्तियों को धन्यवाद प्रस्ताव दिया। डॉ. देवेन्द्र कुमार, वैज्ञानिक-ई, श्री रामश्री सिंह, वैज्ञानिक-ई और श्री विनाय कुमार, एग्रीएफ, श्री प्रीलता, आयएफओ, श्री नवीन कुमार, श्री अमित कुमार और विस्तार प्रभाग, वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून के अन्य अधिकारियों उपस्थित थे इस अवसर पर सेमिनार के सफल आयोजन में साधन दिया।

Jan Bharat Mail 12-8-2023

आजीविका सुधार के लिए कृषि वानिकी जरूरी : डा.रेणु

■ एफआरआई में आयोजित
किया गया ऑनलाइन
सेमीनार

■ सहारा न्यूज ब्यूरो
देहरादून।

वन अनुसंधान संस्थान (एफआरआई) में शुक्रवार को कृषि वानिकी विस्तार, मुद्दे और चुनौतियां विषय पर ऑनलाइन सेमीनार आयोजित किया गया। विस्तार प्रभाग की ओर से आयोजित सेमीनार में संस्थान की निदेशक डा. रेणु सिंह ने बतौर मुख्य अतिथि शिरकत की। उन्होंने राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में कृषि वानिकी की भूमिका और पारिस्थितिकी व पर्यावरण सुरक्षा के लिए इसके उपयोग पर विस्तार से प्रकाश डाला।

देश में भूमि क्षरण की वर्तमान स्थिति और जीवन के विभिन्न पहलुओं पर जलवायु परिवर्तन के परिणामों के प्रभाव पर उन्होंने चिंता व्यक्त की। कहा कि बढ़ती जनसंख्या के साथ आर्थिक विकास के कारण बढ़ी हुई आकांक्षाएं भोजन, चारा, ईंधन की लकड़ी,

फलों व अन्य औद्योगिक कच्चे माल की मांग में कई गुना वृद्धि कर रही है। इस बीच कृषि क्षेत्र में पिछले कुछ वर्षों में विचलन के कारण गिरावट दर्ज की गई है। विभिन्न कारणों से कृषि भूमि को गैर कृषि हेतु उपयोग में लाया जा रहा है। ऐसे में कृषि वानिकी का महत्व और भी बढ़ जाता है।

उन्होंने कहा कि कृषि वानिकी लोगों की सामाजिक, पारिस्थितिकी व आर्थिक जरूरतों को पूरा करने के अलावा आजीविका सुरक्षा प्रदान करने के लिए भी जरूरी है। आईसीएआर के प्रधान वैज्ञानिक डा. बांके विहारी ने कृषि वानिकी विस्तार कार्यक्रमों की सफलता और स्थिरता के लिए सामुदायिक भागीदारी पर प्रकाश डाला।

डा.संदीप आर्य ने हरियाणा में आर्थिक रूप से व्यवहार में लाई गई कृषि वानिकी प्रणालियों के विस्तार की जानकारी दी। डा.अशोक कुमार ने आजीविका में सुधार के लिए कृषि वानिकी प्रजातियों के गुणवत्तापूर्ण रोपण स्टॉक के उत्पादन पर व्याख्यान दिया। विस्तार प्रभाग के डा.चरण सिंह ने कार्यक्रम का संचालन किया।

Sahara News 12-8-2023

Online Seminar On 'Agroforestry Extension: Issues And Challenges'

Dehradun (The Hawk): Growing population coupled with increased aspiration brought by Economic Development caused to manifold increased in demand for food, fodder, fuelwood, fruits and other industrial raw materials and in the meantime the area under agriculture is showing a declining trend over the years due to diversion of agriculture land to non-agriculture purpose for various reasons.

Agroforestry as an effective land management system, which involves deliberate introduction /retention of woody components with agriculture crops including pasture/livestock, simultaneously or sequentially on the same unit of land shall help in increasing the resilience of farming system and reducing vulnerability, buffering the households against climate related risk in addition to provide livelihood security apart from meeting the socio-ecological and economic needs of the people.

As Agroforestry entails various compatible species which are complimentary to each other enriches the crop biodiversity which in turn brings multiple benefits in terms of food, fodder, timber, medicines, fruits and fuelwood- with additional benefits including improvement in soil health- in terms of soil fertility, soil nutrition organic matter, water holding capacity, soil microflora etc.

Looking into the significant role of the agroforestry in the national economy and overall wellbeing of the ecology



and environment Extension Division, Forest Research Institute, Dehradun organized an online seminar on "Agroforestry Extension: Issues and Challenges" on 11th August, 2023 at FRI, Dehradun. Shri Mahaling, IFS, Head Extension Division, FRI welcomed all the participants and guest speakers and briefed the house about the objectives of the seminar.

The online seminar was inaugurated by Dr. Renu Singh, IFS, Director, FRI, Dehradun. While delivering the inaugural address Director FRI expressed the concern on the current status of land degradation in the country and the impact of the consequences of the climate change on various aspects of the life.

Further focusing on the scope of agroforestry especially in view of Paris Climate change Agreement,

Director FRI emphasized that India is committed to achieve the NDC (Nationally Determined Contribution) targets by creating additional carbon sink of 2.5 to 3 Billion tons of CO₂ equivalent through additional forest and tree cover by 2030 which itself a great opportunity for agroforestry extension to gear up itself to take up the challenge.

Lastly address was concluded with the hope that this seminar will certainly be helpful to recommend an appropriate strategy for adoption of Agroforestry in a real sense for income generation of farmers while ensuring the ecological integrity in the long run.

Inaugural address was followed by the technical sessions were held on different topics.

The first topic was on community participation for success and

sustainability of Agroforestry Extension programmes by Dr. Bankey Bihari, Principal Scientist, ICAR-IISWC, Dehradun. He mentioned how effectively the community participation in conservation natural resources and recovery of the degraded land is possible with technical know-how from the government agencies. He also said that agroforestry can play a key role in ameliorating the environment, providing critical ecosystem services, providing nutritional security, increasing productivity besides providing additional income for farmers. Further he emphasized that for successful participation of the community values such as transparency, equality, caring and sharing and feeling plays a significant role in any project.

The second session was delivered by Dr.

Sandeep Arya, Associate Professor, Chaudhary Charan Singh Haryana Agriculture University, Hisar. He spoke on Extension of economically viable agroforestry systems in Haryana. He spoke on diversification of Poplar, Eucalyptus, Melia and Khejari based agroforestry systems with their economics in Haryana. Case studies on different agroforestry systems were also shared through his presentation.

The third session was delivered by Dr. Ashok Kumar, Scientist-G, FRI, Dehradun on Production of quality planting stock of Agroforestry species for livelihood improvement and also shared information of other species which are certainly helpful to enhance the wood production and maintain supply chain of wood on sustainable basis.

About 70 participants including Heads of Divisions of FRI officers and scientists of FRI and students of FRI deemed university and from other wood industry and Non-Government Organization were attended the programme. Dr. Charan Singh, Scientist-F Extension Division coordinated the programme and proposed vote of the thanks to all participants and dignitaries. Dr. Devendra Kumar, Scientist-E, Shri Rambir Singh, Scientist-E and Shri Vijay Kumar, ACF, Mr. Preetpal, FRO, Shri Naveen Chauhan, Shri Amit Singh and other officials of Extension Division, Forest Research Institute, Dehradun were present on the occasion and helped in successful organization of the seminar.

The Hawk 12-8-2023